garuda dandakam of Swami desikan

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्त महा देसिकाय नमः

Please install **Sanskrit New font** to view this file in sanskrit script.

श्री गरुड दण्डकः

श्रीमान् वेङ्कट नाथार्यः कवितार्किक केसरी।
वेदान्ताचार्य वर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

नमः पन्नग नध्दाय
वैकुण्ठ वश वर्तिने।
शृति सिन्दु सुधोत्पाद
मन्दराय गरुत्मते॥

गरुडम् अखिल वेद नीडाधिरूढं
ध्विषत् पीडनोत् कण्ठिताकुण्ठ
वैकुण्ठ पीठीकृत स्कन्धमीडे
स्वनीडा गतिप्रीत रुद्रा सुकीर्त्ति स्तनाबोग
गाढोप गूढ स्फुरत्कण्टक व्रात वेध
व्यथा वेपमान ध्विजिह्वाधिपाकल्प
विष्फार्यमाण स्फटावाटिका रत्न
रोचिश्छटा राजि नीरातितं कान्ति कल्लोलिनी राजितम्

जय गरुड सुपर्ण दर्वीकराहार
देवाधिपाहारहारिन् धिवौकस्पति क्षिप्त
दम्बोलि धाराकिणा कल्प कल्पान्त वातूल
कल्पोदयानल्प वीरायि तोध्यच्चमत
कार दैत्यारि जैत्र ध्वजारोह
निर्धारितोत्कर्ष संकर्षणात्मन् गरुत्मन्
मरुत् पञ्चकाधीश सत्यादि मूर्ते
न कश्चित् समस्ते नमस्ते पुनस्ते नमः

नम इदमजहत् सपर्याय पर्याय निर्यात
पक्षानिलास्फालनोध्वेल पाथोधि वीची
चपेटाहता गाध पातल भांकार
संकृध्द नागेन्द्र पीडा स्नुणी भाव
भास्वन् नख श्रेणये चण्ढ
तुण्डाय नृत्यद् भुजङ्ग भृवे
वज्रिणे दंष्ट्रया तुभ्यम्
अध्यात्मविध्य विधेया विधेया
भवद्दास्य मापादयेथा दयेथाश्च मे

मनुरनुगत पक्षि वक्र स्फुरत्
तारकस् तावकश्चित्र भानुप्रिया
शेखरस् त्रायतां नस्त्रिवर्गापवर्ग
प्रसूतिः परव्योम धामन्
वलद्वेषि दर्प ज्वलद् वालखिल्य
प्रतिज्ञावतीर्ण स्थिरां तत्व
बुध्दिं परां भक्तिधेनुं
जगन्मूल कन्दे मुकुन्दे महानन्द
दोग्ध्रीं दधीथा मुधाकाम हीनाम्
अहीना महीनान्तक

षत् त्रिंशद्गण चरणो
नर परिपाटी नवीन गुम्भ गणः।
विष्णुरथ दण्डकोऽयं
विघटयतु विपक्ष वाहिनी व्यूहम्॥

विचित्र सिध्ददः सोऽयं
वेङ्कटेश विपश्चिता।
गरुडध्वज तोषाय
गीतो गरुडदण्डकः॥

कवितार्किक सिंहाय कल्याण गुण शालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्त गुरवे नमः ॥

Please send your comments and suggestions to R.Venkat